NCERT Solutions for Class 12 History Chapter 5 यात्रियों के नज़रिए

अभ्यास-प्रश्न

उत्तर दीजिए (लगभग 100-150 शब्दों में) ।

प्रश्न 1. 'किताब-उल-हिन्द' पर एक लेख लिखिए।

उत्तरः अरबी में लिखी गई अलल-बिरूनी की कृति 'किताब-उल-हिन्द' की भाषा सरल और स्पष्ट है। यह एक विस्तृत ग्रंथ है जो धर्म और दर्शन, त्योहारों, खगोल विज्ञान, कीमिया, रीति-रिवाजों तथा प्रथाओं, सामाजिक-जीवन, भार-तौल तथा मापन विधियों, मूर्तिकला, कानून, मापतंत्र विज्ञान आदि विषयों के आधार पर अस्सी अध्यायों में विभाजित है। सामान्यतः (हालाँकि हमेशा नहीं) अल-बिरूनी ने प्रत्येक अध्याय में एक विशिष्ट शैली का प्रयोग किया जिसमें आरंभ में एक प्रश्न होता था, फिर संस्कृतवादी परंपराओं पर आधारित वर्णन और अंत में अन्य संस्कृतियों के साथ एक तुलना।

आज के कुछ विद्वानों को तर्क है कि इस लगभग ज्यामितीय संरचना, जो अपनी स्पष्टता तथा पूर्वानुमेयता के लिए उल्लेखनीय है, का एक मुख्य कारण अल-बिरूनी का गणित की ओर झुकाव था। अल-बिरूनी जिसने लेखन में भी अरबी भाषा का प्रयोग किया था, ने संभवतः अपनी कृतियाँ उपमहाद्वीप के सीमांत क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए लिखी थीं। वह संस्कृत, पाली तथा प्राकृत ग्रंथों के अरबी भाषा में अनुवादों तथा रूपांतरणों से परिचित था। इनमें दंतकथाओं से लेकर खगोल विज्ञान और चिकित्सा संबंधी कृतियाँ सभी शामिल थीं, पर साथ ही इन ग्रंथों की लेखन-सामग्री शैली के विषय में उसका दृष्टिकोण आलोचनात्मक था और निश्चित रूप से वह उनमें सुधार करना चाहता था।

प्रश्न 2. इब्न बतूता और बर्नियर ने जिन दृष्टिकोणों से भारत में अपनी यात्राओं के वृत्तांत लिखे थे, उनकी तुलना कीजिए तथा अंतर बताइए।

उत्तरः इब्न बतूता एवं बर्नियर ने भारत में अपनी यात्राओं का वृत्तान्त विभिन्न दृष्टिकोणों से लिखा है इब्न बतूता अन्य यात्रियों के विपरीत पुस्तकों के स्थान पर यात्राओं से अर्जित अनुभव को ज्ञान का अधिक महत्वपूर्ण स्रोत मानता था। उसने अपने यात्रा वृत्तान्त 'रिला' में नवीन संस्कृतियों, लोगों, आस्थाओं, मान्यताओं आदि के विषय में लिखा। उसने भारत की . विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों, आस्थाओं, पूजा स्थलों, राजनीतिक परिस्थितियों तथा आर्थिक परिस्थितियों का विस्तार से वर्णन किया है।

उसने अपनी भारत-यात्रा के दौरान; जो भी अपरिचित था, उसे विशेष रूप से रेखांकित किया ताकि श्रोता अथवा पाठक सुदूर देशों के वृत्तान्तों से प्रभावित हो सकें। उसने नारियल व पान, दो ऐसी वानस्पतिक उपज जिनसे उसके पाठक पूर्णरूपेण अपरिचित थे। उसने भारतीय शहरों को घनी आबादी वाला एवं समृद्ध माना है तथा भारत की शहरी संस्कृति एवं बाजारों की चहल-पहल पर भी प्रकाश डाला है। वह भारत की अत्यधिक कुशल डाक-व्यवस्था को देखकर चकित रह गया। इब्न बतूता का लेखन दृष्टिकोण भी आलोचनात्मक था। उसने हर उस चीज का वर्णन किया; जिसने उसे अपने अनूठेपन के कारण प्रभावित किया।

इसके विपरीत बर्नियर ने भारतीय समाज की त्रुटियों को उजागर करने का प्रयत्न किया। बर्नियर ने भारत में जो भी देखा उसकी यूरोप तथा विशेष रूप से फ्रांस में व्याप्त स्थितियों से तुलना करके भारत की भिन्नता को दर्शाना चाहा। बर्नियर का प्रयास तत्कालीन नीति-निर्धारकों तथा बुद्धिजीवी वर्ग को प्रभावित करने का था। बर्नियर ने यहाँ जो भी भिन्नताएँ देखीं; उन्हें भी पदानुक्रम के अनुसार क्रमबद्ध किया जिससे भारत, पश्चिमी दुनिया को अत्यन्त निम्न स्थिति का प्रकट हो तथा यूरोपीय समाज, प्रशासन एवं यूरोपीय संस्कृति की सर्वश्रेष्ठता प्रमाणित हो सके। संक्षेप में, बर्नियर का विवरण दुर्भावना से प्रेरित

था, फिर भी बर्नियर के आलोचनात्मक विवरण हमें इतिहास निर्माण के मुख्य कथानक प्रदान करते हैं।

प्रश्न 3. बर्नियर के वृत्तांत से उभरने वाले शहरी केंद्रों के चित्र पर चर्चा कीजिए ।

उत्तरः फ्रांसीसी चिकित्सक एवं यात्री बर्नियर एक भिन्न बुद्धिजीवी परम्परा का व्यक्ति था। यहाँ पर बर्नियर का उद्देश्य उन.. नगरों से रहा होगा; जो अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए राजकीय सहायता अथवा राजकीय शिविरों पर निर्भर रहते थे। बर्नियर. यह विवरण सत्य प्रतीत नहीं हो क्योंकि तत्कालीन भारत में विविध प्रकार के नगर थे। ऐसे में हमें अन्य किसी स्रोत से शिविर-नगर की अवधारणा प्राप्त नहीं होती है। तत्कालीन भारत में सभी प्रकार के नगर अस्तित्व में थे। सामान्यतः नगर में व्यापारियों के संगठन होते जिन्हें पश्चिम भारत में महाजन तथा इनके मुखिया को सेठ कहा जाता था।

ये महाजन आधुनिक बैंक की भूमिका का निर्वाह करते अन्य शहरी समूहों में व्यावसायिक वर्ग जैसे चिकित्सक (हकीम अथवा वैद्य), अध्यापक (पंडित या मौलवी), अधिवक्ता (वकील), चित्रकार, वास्तुशास्त्री, संगीतकार आदि सम्मिलित थे। इनमें से कुछ वर्गों को राज्याश्रय प्राप्त था तो कुछ साधारण समाज की सेवा करके बदले में धन प्राप्त कर अपना जीविकोपार्जन करते थे।

प्रश्न 4. इब्न बतूता द्वारा दास प्रथा के संबंध में दिए गए साक्ष्यों का विवेचन कीजिए |

उत्तरः इब्न बतूता के अनुसार, बाजारों में दासे किसी भी अन्य वस्तु की तरह खुलेआम बेचे जाते थे और नियमित रूप से भेंटस्वरूप एक-दूसरे को दिए जाते थे। जब इब्न बतूता सिंध पहुँचा तो उसने सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक के लिए भेंटस्वरूप 'घोड़े, ऊँट तथा दास' खरीदे। जब वह मुल्तान पहुँचा तो उसने गवर्नर को 'किशमिश बादाम के साथ एक दास और घोड़ा' भेंट के रूप में दिए । इब्न बतूता बताता है कि मुहम्मद बिन तुगलक नसीरुद्दीन नामक धर्मोपदेशक

के प्रवचन से इतना प्रसन्न हुआ कि उसे 'एक लाख टके (मुद्रा) तथा दो सौ दास' दे दिए। इब्न बतूता के विवरण से प्रतीत होता है कि दासों में काफी विभेद था। सुल्तान की सेवा में कार्यरत कुछ दासियाँ संगीत और गायन में निपुण थीं।

सुल्तान अपने अमीरों पर नज़र रखने के लिए दासियों को भी नियुक्त करता था। दासों को सामान्यतः घरेलू श्रम के लिए ही इस्तेमाल किया जाता था, और इब्न बतूता ने इनकी सेवाओं को, पालकी या डोले में पुरुषों और महिलाओं को ले जाने में विशेष रूप से अपरिहार्य पाया। दासों की कीमत, विशेष रूप से उन दासियों की, जिनकी आवश्यकता घरेलू श्रम के लिए थी, बहुत कम होती थी और अधिकांश परिवार जो उन्हें रख पाने में समर्थ थे, कम-से-कम एक या दो तो रखते ही थे।

प्रश्न 5. सती प्रथा के कौन-से तत्वों ने बर्नियर का ध्यान अपनी ओर खींचा?

उत्तरः उल्लेखनीय है कि यूटरोपीय यात्रियों एवं लेखकों ने उन बातों का विस्तृत वर्णन करने में अधिक रुचि दिखाई थी, जो उन्हें आश्चर्यजनक अथवा यूरोपीय समाजों से भिन्न दृष्टिगोचर हुई थीं। महिलाओं से किए जाने वाले व्यवहार को पूर्वी और पश्चिमी समाजों के मध्य भिन्नता का एक महत्त्वपूर्ण परिचायक समझा जाता था। अत: बर्नियर भारत में प्रचलित सती प्रथा के प्रति अत्यधिक आकर्षित हुआ और उसने इसके वर्णन को अपने वृत्तान्त का एक महत्त्वपूर्ण भाग बनाया। सती प्रथा मध्यकालीन हिन्दू समाज में व्याप्त कुप्रथाओं में सर्वाधिक घृणित प्रथा थी। 'सती' शब्द का अर्थ है-पतिव्रता और चरित्रवती स्त्री', किंतु सामान्यतया इसका अर्थ पत्नी के अपने मृत पति के शरीर के साथ जल जाने की प्रथा से लिया जाता था। बर्नियर ने लिखा है कि महिलाएँ स्वेच्छापूर्वक खुशी-खुशी अपने पति के शव के साथ सती हो जाती थीं।

किंतु अधिकांश को ऐसा करने के लिए विवश कर दिया जाता था। लाहौर में एक बालिका के सती होने की घटना का अत्यधिक मार्मिक विवरण देते हुए

उसने लिखा है, "लाहौर में मैंने एक बहुत ही सुन्दर अल्पवयस्क विधवा जिसकी आयु मेरे विचार में बाहर वर्ष से अधिक नहीं थी, की बलि होते देखी। उस भयानक नर्क की ओर जाते हुए वह असहाय छोटी बच्ची जीवित से अधिक मृत प्रतीत हो रही थी; उसके मस्तिष्क की व्यथा का वर्णन नहीं किया जा सकता; वह काँपते हुए बुरी तरह से रो रही थी; लेकिन तीन-चार ब्राह्मण, एक बूढ़ी औरत, जिसने उसे अपनी आस्तीन के नीचे दबाया हुआ था, की सहायता से उस अनिच्छुक पीड़िता को घातक स्थल की ओर ले गए।

उसे लकड़ियों पर बैठाया; उसके हाथ-पाँव बाँध दिए ताकि वह भाग न जाए और इस स्थिति में उस मासूम प्राणी को जिन्दा जला दिया गया। मैं अपनी भावनाओं को दबाने में असमर्थ था...." इस विवरण से स्पष्ट होता है कि सती प्रथा के अन्तर्गत सती होने वाली महिलाओं की अल्पवयस्कता, अनीच्छा, व्यथा, विवशता एवं असहायता जैसे तत्वों ने बर्नियर का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया था।

निम्नलिखित पर एक लघु निबंध लिखिए (लगभग 250 से 300 शब्दों में)

प्रश्न 6. जाति व्यवस्था के संबंध में अल-बिरूनी की व्याख्या पर चर्चा कीजिए |

उत्तरः सुप्रसिद्ध अरब लेखक अल-बिरूनी ने भारत के विषय में अपनी विभिन्न पुस्तकों में लिखा, जिनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान ।

'किताब-उल-हिन्द' का है, जिसे **'तहकीक-ए-हिन्द'** के नाम से भी जाना जाता है। अलबिरूनी ने भारत की सामाजिक दशा, रीति-रिवाजों, भारतीयों के खान-पान, वेशभूषा, उत्सव त्योहार, आमोद-प्रमोद आदि के विषय में विस्तारपूर्वक लिखा है।

जाति व्यवस्था :

जाति व्यवस्था का वर्णन करते हुए अल-बिरूनी ने लिखा है, "सबसे ऊँची जाति ब्राह्मणों की है, जिनके विषय में हिन्दुओं के ग्रंथ हमें बताते हैं कि वे ब्रह्मा के सिर से उत्पन्न हुए थे और क्योंकि ब्रह्मा प्रकृति नामक शक्ति का ही दूसरा नाम है और सिर... शरीर का सबसे ऊपरी भाग है, इसलिए ब्राह्मण पूरी प्रजाति के सबसे चुनिंदा भाग हैं। इसी कारण से हिन्दू उन्हें मानव जाति में सबसे उत्तम मानते हैं ।

अगली जाति क्षत्रियों की है जिनका सृजन ऐसा कहा जाता है, ब्रह्मा के कन्धों और हाथों से हुआ था। उनका दर्जा ब्राह्मणों से अधिक नीचे नहीं है। उनके पश्चात् वैश्य आते हैं, जिनका उद्भव ब्रह्मा की जंघाओं से हुआ था। शूद्र, जिनका सृजन चरणों से हुआ था। अंतिम दो वर्गों के बीच अधिक अंतर नहीं है। किंतु इन वर्गों के बीच भिन्नता होने पर भी ये एक साथ एक ही शहरों और गाँवों में रहते हैं; समान घरों और आवासों में मिलल-जुलकर।

जाति व्यवस्था की तुलना प्राचीन फारस की सामाजिक व्यवस्था से

अल-बिरूनी ने भारत में विद्यमान जाति व्यवस्था को अन्य समुदायों में प्रतिरूपों की खोज के द्वारा समझने का प्रयास किया। उसने इस व्यवस्था की व्याख्या करने में भी अन्य समुदायों के प्रतिरूपों का आश्रय लिया। उसने भारत में विद्यमान वर्ण-व्यवस्था की तुलना प्राचीन फारस की सामाजिक व्यवस्था से करते हुए लिखा कि प्राचीन फारस के समाज में भी घुड़सवार एवं शासक वर्ग; भिक्षु, आनुष्ठानिक पुरोहित और चिकित्सक; खगोलशास्त्री एवं अन्य वैज्ञानिक और अंत में कृषक एवं शिल्पकार, ये चार वर्ग अस्तित्व में थे। इस प्रकार, अलबिरुनी यह स्पष्ट कर देना चाहता था कि ये सामाजिक वर्ग केवल भारत तक ही सीमित नहीं थे। इसके साथ-ही-साथ अल-बिरूनी ने यह भी स्पष्ट किया कि इस्लाम में इस प्रकार का कोई वर्ग विभाजन नहीं था; सामाजिक दृष्टि से सभी लोगों को समान समझा जाता था; उनमें भिन्नताएँ केवल धार्मिकता के पालन के आधार पर विद्यमान थीं।

अपवित्रता की मान्यता को अस्वीकार

उल्लेखनीय है कि अल-बिरूनी ने जाति व्यवस्था के संबंध में ब्राह्मणवादी व्याख्या को तो स्वीकार कर लिया, किंतु वह अपवित्रता की मान्यता को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हुआ। उसकी मान्यता थी कि प्रत्येक वह वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, अपनी पवित्रता की मौलिक स्थिति को पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न करती है और इसमें उसे सफलता भी प्राप्त होती है। उदाहरण देते हुए उसने लिखा कि सूर्य हवा को शुद्ध बनाता है और समुद्र में विद्यमान नमक पानी को गन्दा होने से रक्षा करता है। उसने अपने तर्क पर बल देते हुए कहा कि ऐसा न होने की स्थिति में पृथ्वी पर जीवन सम्भव नहीं हो पाता। उसका विचार था कि जाति व्यवस्था में विद्यमान अपवित्रता की अवधारणा प्रकृति के नियमों के अनुकूल नहीं थी।

मूल्यांकन

इस प्रकार, यह स्पष्ट हो जाता है कि अल-बिरूनी के जाति व्यवस्था संबंधी विवरण पर उसके संस्कृत ग्रंथों के गहन अध्ययन की स्पष्ट छाप थी। हमें याद रखना चाहिए कि इन ग्रंथों में जाति व्यवस्था का संचालन करने वाले नियमों का प्रतिपादन ब्राह्मणों के दृष्टिकोण से किया गया था। वास्तविक जीवन में इस व्यवस्था के नियमों का पालन न तो इतनी कठोरता से किया जाता था और न ही ऐसा किया जाना संभव था। उल्लेखनीय है कि अंत्यज (व्यवस्था से परे) हालाँकि वर्ण-व्यवस्था के दायरे से बाहर थे, किंतु उनसे किसानों एवं जमींदारों लिए सस्ता श्रम उपलब्ध कराने की अपेक्षा की जाती थी। इस प्रकार प्रायः सामाजिक प्रताड़ना के शिकार होते हुए भी वे आर्थिक तंत्र एक भाग थे।

प्रश्न 7. क्या आपको लगता है कि समकालीन शहरी केंद्रों में जीवन-शैली की सही जानकारी प्राप्त करने में इन बतूता का वृत्तांत सहायक है? अपने उत्तर के कारण दीजिए।

उत्तरः हाँ, हमें लगता है कि इब्न बतूता का वृत्तान्त समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन शैली की सही जानकारी प्राप्त करने में सहायक है जिसका कारण यह है कि यह वृत्तान्त बहुत ही विस्तृत तथा स्पष्ट है। ऐसा लगता है कि जैसे सजीव चित्र हमारे सामने प्रस्तुत कर दिया गया हो। इब्न बतूता के वृत्तान्त से समकालीन शहरी केन्द्रों में जीवन-शैली के बारे में अग्रलिखित जानकारियाँ प्राप्त होती हैं

(1) व्यापक अवसरों से परिपूर्ण शहर:

इब्न बतूता के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप के नगरों में इच्छाशक्ति, साधनों एवं कौशल वाले लोगों के लिए भरपूर अवसर थे। ये नगर समान जनसंख्या वाले व समृद्ध थे, परन्तु कुछ नगर युद्धों एवं अभियानों के कारण नष्ट भी हो चुके थे।

(2) भीड़-भाड़ युक्त सड़कें एवं चमक-दमक युक्त बाजार:

इब्न बतूता के वृत्तान्त से ऐसा प्रतीत होता है कि अधिकांश नगरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें एवं चमक-दमक वाले और रंगीन बाजार थे जो विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से भरे रहते थे।

(3) भारत का सबसे बड़ा नगर-इब्न बतूता के अनुसार दिल्ली भारत का सबसे बड़ा नगर था जिसकी जनसंख्या बहुत अधिक थी।

(4) बाजारों का सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र होना:

बाजार केवल क्रय-विक्रय के ही स्थान नहीं थे, बल्कि ये सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के भी केन्द्र थे। अधिकांश बाजारों में एक मस्जिद व एक मन्दिर होता था। कुछ बाजारों में नर्तकों, संगीतकारों व गायकों के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए स्थान भी उपलब्ध थे।

(5) इब्न बतूता के वृत्तान्त का इतिहासकारों द्वारा प्रयोग करना:

इब्न बतूता ने नगरों की समृद्धि का वर्णन करने में अधिक रुचि नहीं ली, परन्तु इतिहासकारों ने उसके वृत्तान्त का प्रयोग यह तर्क देने में किया है कि नगरों की समृद्धि का आकार गाँवों की ग्रामीण अर्थव्यवस्था थी।

(6) भारतीय कृषि का उन्नत होना इब्न बतूता के अनुसार भारतीय कृषि बहुत अधिक उन्नत थी जिसका प्रमुख कारण मिट्टी का उपजाऊपन था। अतः किसानों के लिए वर्ष में दो फसलें उगाना आसान था।

(7) भारतीय उपमहाद्वीप के व्यापार व वाणिज्य का एशियाई तन्त्रों से भली-भाँति जुड़ा होना-इब्न बतूता के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप व्यापार व वाणिज्य के एशियाई तन्त्रों से भली-भाँति जुड़ा हुआ था। भारतीय माल की मध्य तथा दक्षिण-पूर्व एशिया में पर्याप्त माँगे थी जिससे शिल्पकारों एवं व्यापारियों को बहुत अधिक लाभ प्राप्त होता था।

प्रश्न 8. चर्चा कीजिए कि बर्नियर का वृत्तांत किस सीमा तक इतिहासकारों को समकालीन ग्रामीण समाज को पुनर्निर्मित करने में सक्षम करता है?

उत्तरः फ्रांसीसी यात्री बर्नियर के अनुसार भारत तथा यूरोप के मध्य मूल असमानताओं में से एक भारत में निजी भू-स्वामित्व का सर्वथा अभाव था। बर्नियर का निजी भू-स्वामित्व में अत्यधिक विश्वास था तथा उसने, भूमि पर राजकीय स्वामित्व को राज्य तथा उसके निवासियों, दोनों के लिए हानिकारक बताया। यहाँ बर्नियर को यह प्रतीत हुआ कि मुगल साम्राज्य में सम्राट सम्पूर्ण भूमि का स्वामी था जो भूमि को अपने अमीरों के मध्य बाँटता था जिसके समाज तथा अर्थव्यवस्था पर अनर्थकारी प्रभाव होते थे।

बर्नियर अपने विवरण में लिखता है कि राज्य के भू-स्वामित्व के परिणामस्वरूप भू-धारक अपने बच्चों को भूमि नहीं दे सकते थे इसलिए वे भूमि की उर्वरता बढ़ाने के कोई प्रयास नहीं करते थे। निजी भू-स्वामित्व के अभाव ने उच्चस्तरीय भू-धारकों के वर्ग के उदय को रोका जो भूमि के रखरखाव एवं बेहतरी के प्रति

सचेत रहते जिसके परिणामस्वरूप कृषि का विनाश, किसानों का अत्यधिक उत्पीड़न तथा समाज के सभी वर्गों के जीवन-स्तर में अनवरत पतन की स्थिति उत्पन्न हुई, सिवाय शासक वर्ग के।

बर्नियर लिखता है कि दरिद्र भारतीय समाज; अल्पसंख्यक अमीर तथा शासक वर्ग के अधीन था। बर्नियर के अनुसार भारत में मध्यम वर्ग के लोग नहीं थे। बर्नियर के अनुसार, भारत के अत्यधिक विशाल ग्रामीण क्षेत्रों में से अनेक मात्र रेतीली भूमियाँ अथवा बंजर पर्वत ही हैं। यहाँ की खेती उच्च स्तर की नहीं है तथा इन क्षेत्रों की जनसंख्या भी कम ही है। यहाँ तक कि कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा हिस्सा भी श्रमिकों के अभाव में कृषि-विहीन ही रह जाता है क्योंकि इनमें से अनेक श्रमिक गवर्नरों द्वारा की गई अमानवीयता के कारण मर जाते हैं। निर्धन लोग जब अपने लोभी स्वामियों की मांगों को पूर्ण करने में असमर्थ हो जाते हैं तो उन्हें न केवल जीवन-निर्वाह के साधनों से वंचित कर दिया जाता है, अपितु उन्हें अपने बच्चों से भी हाथ धोना पड़ता है, जिन्हें दास बनाकर ले जाया जाता है। ऐसी निरंकुशता से हताश होकर किसान गाँव छोड़कर चले जाते हैं।

अत: यह कहना उचित है कि बर्नियर के विवरणों ने अठारहवीं शताब्दी के पश्चिमी विचारकों (जैसे-मॉन्टेस्क्यू और कार्ल मार्क्स) को प्रभावित किया। हालांकि भारतीय इतिहासकारों के लिए बर्नियर का विवरण एक सीमा तक ही उपयोगी है क्योंकि यह वृत्तान्त बहुत हद तक साम्राज्यवादी इतिहासकारों तथा उपनिवेशी शासकों की विचारधारा से प्रभावित है।

प्रश्न 9. यह बर्नियर से लिया गया एक उद्धरण है -

ऐसे लोगों द्वारा तैयार सुंदर शिल्पकारीगरी के बहुत उदाहरण हैं जिनके पास औजारों का अभाव है, और जिनके विषय में यह भी नहीं कहा जा सकता कि उन्होंने किसी निपुण कारीगर से कार्य सीखा है। कभी-कभी वे यूरोप में तैयार वस्तुओं की इतनी निपुणता से नकल करते हैं कि असली और नकली के बीच

अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता है। अन्य वस्तुओं में, भारतीय लोग बेहतरीन बंदूकें और ऐसे सुंदर स्वर्णाभूषण बनाते हैं कि संदेह होता है कि कोई यूटरोपीय स्वर्णकार कारीगरी के इन उत्कृष्ट नमूनों से बेहतर बना सकता है। मैं अकसर इनके चित्रों की सुंदरता, मृदुलता तथा सूक्ष्मता से आकर्षित हुआ हूँ।

उसके द्वारा अलिखित शिल्प कार्यों को सूचीबद्ध कीजिए तथा इसकी तुलना अध्याय में वर्णित शिल्प गतिविधियों से कीजिए।

उत्तरः प्रस्तुत उद्धरण से पता लगता है कि बर्नियर की भारतीय कारीगरों के विषय में अच्छी राय थी। उसके मतानुसार भारतीय कारीगर अच्छे औज़ारों के अभाव में भी कारीगरी के प्रशंसनीय नमूने प्रस्तुत करते थे। वे यूरोप में निर्मित वस्तुओं की इतनी कुशलतापूर्वक नकल करते थे कि असली और नकली में अंतर कर पाना मुश्किल हो जाता था। बर्नियर भारतीय चित्रकारों की कुशलता से अत्यधिक प्रभावित था। वह भारतीय चित्रों की सुंदरता, मृदुलता एवं सूक्ष्मता से विशेष रूप से आकर्षित हुआ था। इस उद्धरण में बर्नियर ने बंदूक बनाने, स्वर्ण आभूषण बनाने तथा चित्रकारी जैसे शिल्पों की विशेष रूप से प्रशंसा की है। अलिखित शिल्प कार्य ।

बर्नियर द्वारा अलिखित शिल्पों या शिल्पकारों को इस प्रकार सूचीबद्ध किया जा सकता है - बढ़ई, लोहार, जुलाहा, कुम्हार, खरादी, प्रलाक्षा रस को रोगन लगाने वाले, कसीदकार दर्जी, जूते बनाने वाले, रेशमकारी और महीन मलमल का काम करने वाले, वास्तुविद, संगीतकार तथा सुलेखक आदि ॥ प्रस्तुत उद्धरण में बर्नियर ने लिखा है कि भारतीय कारीगर औजार एवं प्रशिक्षण के अभाव में भी कारीगरी के प्रशंसनीय नमूने प्रस्तुत करने में सक्षम थे। अध्याय में वर्णित शिल्प गतिविधियों से पता चलता है कि कारखानों अथवा कार्यशालाओं में कारीगर विशेषज्ञों की देख-रेख में कार्य करते थे। कारखाने में भिन्न-भिन्न शिल्पों के लिए अलगअलग कक्ष थे। शिल्पकार अपने कारखाने में प्रतिदिन सुबह आते थे और पूरा दिन अपने कार्य में व्यस्त रहते थे।

मानचित्र कार्य

प्रश्न 10. विश्व के सीमारेखा मानचित्र पर उन देशों को चिह्नित कीजिए जिनकी यात्रा इन बतूता ने की थी। कौन-कौन से | समुद्रों को उसने पार किया होगा?

उत्तरः संकेत-1332-33 में भारत के लिए प्रस्थान करने से पहले इब्न बतूता ने मक्का की तीर्थयात्रा की और सीरिया, इराक, फारस, यमन, ओमान और पूर्वी अफ्रीका के तटीय व्यापारिक बंदरगाहों की यात्राएँ कर चुका था। 1342 में दिल्ली के सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक के आदेश पर वह सुल्तान के दूत के रूप में चीन गया। भारत में उसने मालाबार तट से महाद्वीप की यात्रा की। उसके वृत्तांत की तुलना 13वीं शताब्दी के अंत में वेनिस से चीन तक यात्रा करने वाले मार्कोपोलो के यात्रा-वृत्तांत से की जाती है। • उपर्युक्त संकेत के आधार पर विद्यार्थी स्वयं करें।